॥ श्री ॥

परीक्षामुख

PARIKSHAAMUKHA

माणिक्यनन्दि · ११वीं शती · अभिलेख ६१/९०

श्री रत्ननन्दि → **माणिक्यनन्दि** → श्री मेघचन्द्राचार्य

संक्षिप्त परिचय

आचार्य माणिक्यनन्दि कृत — जैन न्याय का प्रथम सुव्यवस्थित सूत्र-ग्रन्थ; प्रमाण के लक्षण, भेद, विषय और फल का संक्षिप्त निर्दोष निरूपण।

अकलंक-वाङ्मय का यह सूत्रबद्ध नवनीत कहा जाता है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

परीक्षामुख — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ६१ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता माणिक्यनन्दि; रचना-काल ११वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ११४) के अनुसार इनका समय ६६३–६७९ है तथा गुरु श्री रत्ननन्दि। समकालीन ग्रन्थों में धर्मपरीक्षा, श्रावकाचार, सुभाषितरत्नसंदोह, वर्धमानचरित, पार्श्वनाथचरित, न्यायकुमुदचन्द्र परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

धर्मपरीक्षा · श्रावकाचार · सुभाषितरत्नसंदोह · वर्धमानचरित · पार्श्वनाथचरित · न्यायकुमुदचन्द्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ६१ — मूल छायाचित्र

← प्रमेयकमलमार्तण्ड

परीक्षामुखवृत्ति →